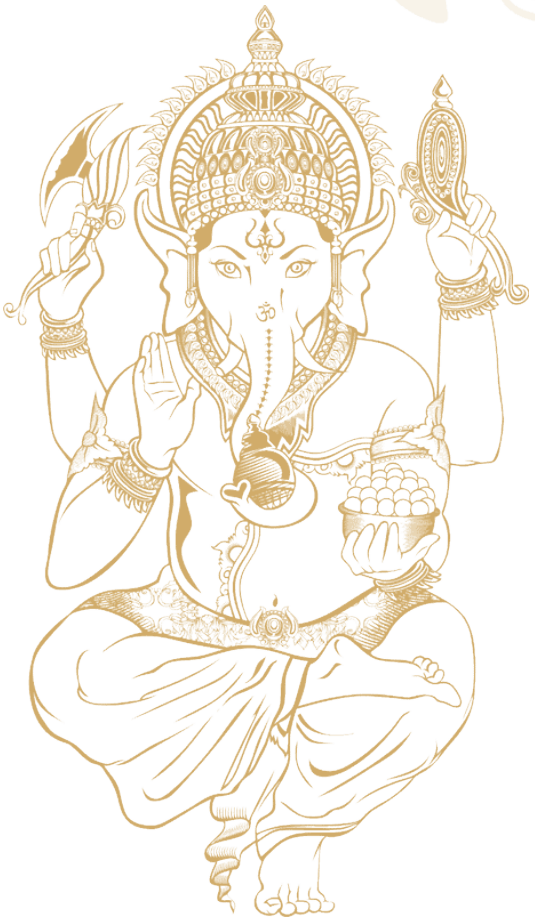

# Anshu

10 Nov 1992

01:32 PM

Meerut

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121518501

**तिथि** 10/11/1992 **समय** 13:32:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Meerut **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:45:42
**अक्षांश** 29:00:00 उत्तर **रेखांश** 77:42:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:12 घंटे

### पंचांग

| | |
|---|---|
| साम्पातिक काल | 16:31:43 घं |
| वेलान्तर | 00:16:05 घं |
| सूर्योदय | 06:38:48 घं |
| सूर्यास्त | 17:27:23 घं |
| चैत्रादि संवत | 2049 |
| शक संवत | 1914 |
| मास | कार्तिक |
| पक्ष | शुक्ल |
| तिथि | 15 |
| नक्षत्र | भरणी |
| योग | वरियान |
| करण | बव |

### अवकहड़ा चक्र

| | |
|---|---|
| गण | मनुष्य |
| योनि | गज |
| नाड़ी | मध्य |
| वर्ण | क्षत्रिय |
| वश्य | चतुष्पाद |
| वर्ग | मृग |
| युँजा | पूर्व |
| हंसक | अग्नि |
| जन्म नामाक्षर | लो-लोचन |
| पाया(रा.-न.) | ताम्र-स्वर्ण |
| होरा | गुरु |
| चौघड़िया | काल |

### विंशोत्तरी

शुक्र 4वर्ष 4मा 4दि

राहु

16/03/2020
16/03/2038

| | |
|---|---|
| राहु | 27/11/2022 |
| गुरु | 22/04/2025 |
| शनि | 27/02/2028 |
| बुध | 15/09/2030 |
| केतु | 04/10/2031 |
| शुक्र | 03/10/2034 |
| सूर्य | 28/08/2035 |
| चन्द्र | 26/02/2037 |
| मंगल | 16/03/2038 |

### योगिनी

भद्रिका 1वर्ष 1मा 1दि

भद्रिका

12/12/2024
12/12/2029

| | |
|---|---|
| भद्रिका | 22/08/2025 |
| उल्का | 23/06/2026 |
| सिद्धा | 13/06/2027 |
| संकटा | 23/07/2028 |
| मंगला | 11/09/2028 |
| पिंगला | 22/12/2028 |
| धान्या | 23/05/2029 |
| भ्रामरी | 12/12/2029 |

| ग्रह | व | अ | अंश | राशि | नक्षत्र | पद | स्वामी | अं. | स्थिति | षट्बल | चर | स्थिर | ग्रह तारा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | 05:25:14 | कुंभ | धनिष्ठा | 4 | मंगल | सूर्य | --- | 0:00 | | | |
| सूर्य | | | 24:25:18 | तुला | विशाखा | 2 | गुरु | बुध | नीच राशि | 1.21 | आत्मा | पितृ | साधक |
| चंद्र | | | 23:46:11 | मेष | भरणी | 4 | शुक्र | शनि | सम राशि | 1.26 | अमात्य | मातृ | जन्म |
| मंगल | | | 01:40:09 | कर्क | पुनर्वसु | 4 | गुरु | राहु | नीच राशि | 1.21 | कलत्र | भ्रातृ | साधक |
| बुध | | | 14:32:06 | वृश्चि | अनुराधा | 4 | शनि | राहु | सम राशि | 1.12 | मातृ | ज्ञाति | वध |
| गुरु | | | 12:24:29 | कन्या | हस्त | 1 | चंद्र | राहु | शत्रु राशि | 1.22 | पुत्र | धन | विपत |
| शुक्र | | | 02:23:20 | धनु | मूल | 1 | केतु | शुक्र | सम राशि | 1.00 | ज्ञाति | कलत्र | अतिमित्र |
| शनि | | | 18:35:46 | मक | श्रवण | 3 | चंद्र | बुध | स्वराशि | 0.92 | भ्रातृ | आयु | विपत |
| राहु | व | | 28:00:56 | वृश्चि | ज्येष्ठा | 4 | बुध | शनि | शत्रु राशि | | --- | ज्ञान | मित्र |
| केतु | व | | 28:00:56 | वृष | मृगशिरा | 2 | मंगल | शनि | सम राशि | | --- | मोक्ष | क्षेम |

## लग्न-चलित

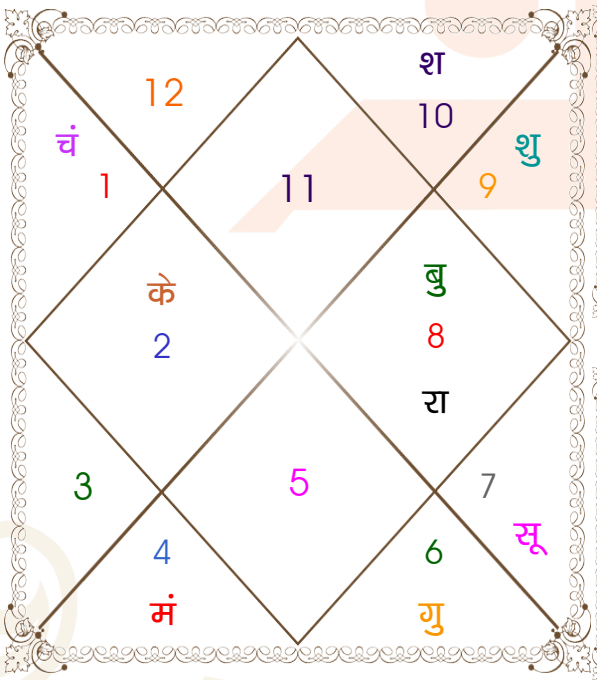


## चन्द्र कुंडली

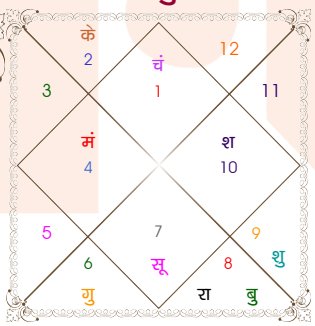


## नवमांश कुंडली

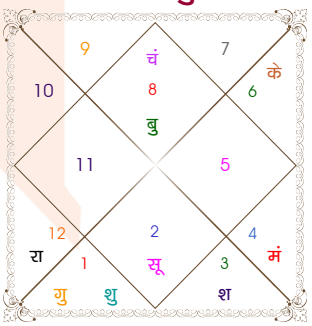


## सर्वाष्टकवर्ग

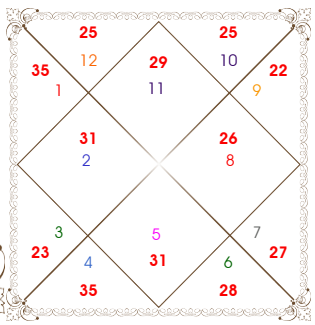


## दशमांश कुंडली

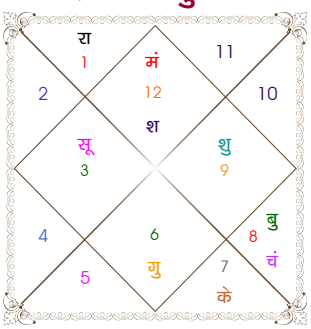



**Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre**
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com

# नक्षत्रफल

आपका जन्म भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल है। आपका मनुष्य गण, क्षत्रिय वर्ण, मध्य नाडी, गज योनि तथा मृग वर्ग है। चतुर्थ चरण में जन्म लेने के कारण आपके जन्म नाम का पहलाक्षर "लो" होगा।

इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न होने के कारण आपकी मनोरंजन के कार्यक्रम यथा संगीत, नृत्य, सिनेमा तथा खेलकूदों में विशेष रूचि रहेगी तथा इसी पर आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी। जल से आप स्वाभाविक रूप से भयभीत रहेंगी। प्रकृति आपकी चंचल होगी तथा अन्य जनों से आपका व्यवहार समान्य रहेगा।

**सदापकीर्ति र्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः।**
**जलातिभीरूश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात भरणी में उत्पन्न जातक लोकोपवाद से अपयश पाने वाला, अपने समय को नाना प्रकार के खेल या विनोद द्वारा व्यतीत करता है। यह जल से भीरू, चंचल प्रवृति तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप अपने संकल्प का दृढ़ता से पालन करेंगी। जिस चीज के विषय में एक बार सोच लेंगी उसे पूर्ण करके ही रहेंगी। आप सत्य बोलेंगी तथा सत्य का पालन करेंगी। आपका शरीर सामान्य रूप से स्वस्थ रहेगा तथा रोगाभाव रहेगा। आपकी कार्यशैली चतुराई पूर्ण ढंग की होगी तथा जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

**कृत निश्चयः सत्यारूग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु।**
**बृहज्जातकम्**

अर्थात् भरणी नक्षत्र में जन्मा जातक सत्यवक्ता, बात का पक्का, रोगरहित और कार्यकलाप में चतुर होता है।

कभी कभी आप का स्वभाव हठी बन जाता है। जिससे अन्य जनों को भी परेशानी का सामना करना पडता है। क्योंकि आप जिस चीज की जिदद करेंगी उसे पूरा करके ही छोड़ेंगी चाहे वह उचित हो या अनुचित। धन का आप आजीवन उपभोग करेंगी इसका कोई अभाव आपके पास नहीं रहेगा। आपका शरीर सामान्य रूप से स्वस्थ रहेगा तथा आपकी मुखाकृति निश्चित रूप से सुन्दर एवं दर्शनीय होगी।

**अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढब्रतः।**
**भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।**
**जातक दीपिका**

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सम्पत्तिशाली और हठव्रती होता है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह सुनिश्चयी होते है।

समय समय पर आप मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता का अनुभव करेंगी। कठोरता भी यदा कदा आपके ह्दय में निहित रहेगी। परन्तु आप धनवान होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

**याम्यर्क्षे विकलोऽन्यदारनिरतः क्रूरः कृतध्नो धनी।**
**जातकपरिजातः**

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

मेष राशि में उत्पन्न होने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाली होंगी तथा अपने भाई बहनों में भी श्रेष्ठ होंगी।

**मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।**
**जातकपरिजातः**

आपका शरीर ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण का होगा। आँखें गोल, चंचल तथा लालिमा युक्त होंगी। तथा आपके सिर पर किसी घाव का निशान भी हो सकता है।

आपके हाथ तथा पैरों की कान्ति कमल के समान होगी। जल से आप स्वाभाविक रूप से भयभीत रहेंगी। साहस तथा संघर्ष करने की शक्ति स्वभाव से ही आपके पास होगी परिणाम स्वरूप अपने सारे कार्य को साहसपूर्ण सम्पन्न करेंगी। आपकी बुद्धि चंचलता से युक्त होगी तथा धन को आप मान सम्मान से भी अधिक महत्व देंगी जिससे यदा कदा समस्याएं उत्पन्न होगी। सहयोगियों तथा मित्रों का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। पुत्रों की संख्या भी पुत्रियों की संख्या से अधिक होगी। लेकिन सर्वसामान्य से आपका व्यवहार स्नेहयुक्त रहेगा। इसी सद्वृति एवं विनयशीलता के कारण आपको समाज में मान तथा सम्मान प्राप्त होगा।

**सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।**
**कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चत्रचलो मानवित्तः।।**
**पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।**
**सस्नेहतोयभीरू व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।**
**सारावली**

आप शीघ्र ही नाराज हो जाएंगी तथा शीघ्र ही प्रसन्न भी हो जाएगी। यह आपकी नैसर्गिक प्रवृति होगी। इधर उधर भ्रमण करना आपको रूचिकर लगेगा। आपकी हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि हो सकता हैं। पुरूषों के समाज में आप प्रिय एवं आदरणीय समझी जाएंगी। अन्य लोगों की सेवा करना तथा उन्हें सहयोग प्रदान करना आप अपना विशेष कर्तव्य समझेंगी तथा अपनी कठिनाईयों को भूल कर आप दूसरों को सहयोग प्रदान करेंगी।

**वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।**
**कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।**
**कुनखी व्रणाङ्किंतशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।**
**शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरूः क्रिये।।**
**बृहज्जातकम्**

धन को अनावश्यक महत्व प्रदान करने की इस प्रवृति से आपके श्रेष्ठ संबंधीगण नाराज होंगे। परिणामस्वरूप या तो वे आपसे या आप उनसे अलग रहेंगी। इसके अतिरिक्त घर के सारे कार्यों में आपका प्रभुत्व रहेगा। आपके पति आपकी सलाह के बिना कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। अतः अलगाव का यह भी एक कारण होगा। धन तथा पुत्र से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा अपने वैभव के द्वारा समाज में कीर्ति प्राप्त करेंगी।

**स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।**
**अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।**
**जातकाभरणम्**

भ्रमण के लिए आप अगम्य स्थानों पर जाने की इच्छा करेंगी। सामाजिक सबंधोंकी विस्तृता के कारण आप कभी कभी अभक्ष्य पदार्थों अथवा मांस, मदिरा आदि का भी सेवन कर सकती हैं।

**मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।**
**वृहत्पाराशर होराशास्त्र**

आपके स्वभाव में कभी कभी उग्रता का समावेश हो जाता हैं। यह उग्रता जब क्रोध के रूप में उत्पन्न होगी तो उससे अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। प्रवृति में चंचलता के कारण आप कभी कभी मिथ्या भाषण भी करेंगी।

**वृतेक्षणो दुर्बलजानुरूग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।**
**संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।**

**फलदीपिका**

यौगिक क्रियाओं में भी आपकी रूचि रहेगी। आप पित्तकारक या शरीर तथा मस्तिष्क को गरमी प्रदान करने वाले पदार्थों का यथा शक्ति अल्प प्रयोग करें। अन्यथा मस्तिष्क में विकार का योग बनता है। साथ ही दुर्घटनाओं से भी आप दूर ही रहें।

**भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।**
**न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।**
**व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।**
**संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।**

**जातक दीपिका**

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृति से युक्त होंगी। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी अगाध श्रद्धा होगी तथा नियम से आप इनका पूजन करेंगी। आपके स्वभाव में अभिमान की झलक भी परिलक्षित होगी। धन की आपके पास कोई कमी नहीं रहेगी इसका पर्याप्त मात्रा में अर्जन होता रहेगा। दयालुता भी आपके अन्तः करण में रहेगी तथा दीन दुःखियों की यथा शक्ति सेवा तथा सहायता करेंगी। आप एक से अधिक कार्य या कलाओं की जानने वाली होंगी। ज्ञानार्जन में आपकी गहन रूचि रहेगी तथा शरीर कान्तियुक्त रहेगा। साथ ही आप बहुत से मनुष्यों को सुख प्रदान करने वाली होंगी।

**लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।**
**पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।**
**कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।**
**चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।**

**मानसागरी**

मान सम्मान से आप सदैव परिपूर्ण रहेंगी तथा आजीवन आप विपुलधन की स्वामिनी बनेंगी। आप एक अच्छी निशानेबाज भी होंगी। आपका शरीर गौरवर्ण का होगा तथा नगरवासियों को आप वश में रखने वाली होंगी। आपके नेत्र बङे तथा गोल होंगे।

**देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।**
**प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।**

**जातकाभरणम्**

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गज योनि में उत्पन्न होने के कारण आप राजा की प्रिय होंगी अर्थात् बङे बङे मंत्रियों तथा उच्चाधिकारियों से आपके घनिष्ठ संबंध होंगे तथा वे लोग आपको आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप आत्म, बाहु तथा बुद्धि बल से सुशोभित रहेंगी। अपने सारे कार्य

आप अपने ही बल पर सम्पन्न करेंगी। समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप उपभोग करेंगी। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी की सहयोगी या स्वयं कोई उच्चाधिकारी हो सकती हैं। आपकी प्रवृति उत्साही होगी तथा इसी प्रवृति से आप उन्नति के शिखर पर पहुँचेंगी।

**राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।**
**आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा। धन धान्य का वे पूर्ण लाभार्जन करेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार से आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी वे पूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा आपको प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा किसी सैद्धान्तिक मतभेद पर इसमें कटुता या तनाव भी परिलक्षित होगा परन्तु कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं उन्हें सर्वदा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से

आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, मंगल वार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि का चन्द्रमा आपके लिए अनिष्टकारी हैं। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 तिथियों मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, साझेदारी लेन देन आदि महत्वपूर्ण कार्य न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। इसके साथ ही मंगलवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो। शारीरिक तथा मानसिक अशान्ति, व्यापार में हानि या नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव श्री हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। तथा सोना, तांबा, गैंहू, घी, आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7 हजार जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति की प्राप्ति होगी तथा अशुभ फल भी कम होंगे। इसके अतिरिक्त मंगलवार का उपवास भी शुभ फल एवं शान्ति प्रदान करेगा।

**ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।**
**मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।**